AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing *Impact Factor: 5.0*
Vol (3), Issue (4), October-December 2026 *ISSN: 3048-7951*

शिक्षा में श्रेय और प्रेय की प्रासंगिकता : उपनिषदों के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन

प्रिया त्रिपाठी[1] ; प्रो. नन्दलाल मिश्रा[2]

DOI: http://doi.org/10.5281/zenodo.24519147

Review: 05/10/2026 **Acceptance: 09/10/2026** **Publication:25/11/2026**

सारांश:

भारतीय ज्ञान परंपरा में उपनिषदों का महत्वपूर्ण स्थान है इनमें मानव जीवन के कल्याण हेतु अनेक प्रकार के विचार प्रस्तुत किए गए हैं कठोपनिषद में उल्लेखित श्रेय एवं प्रेय का विवेचन मनुष्य द्वारा लिए जाने वाले निर्णय को एक मजबूत आधार प्रदान करता है| श्रेय उस मार्ग को इंगित करता है जो परम कल्याण मयी है, जो परम आनंद प्रदायक है, जिस मार्ग को चुनने से मानव जीवन की सार्थकता सिद्ध होती है वह केवल श्रेय मार्ग ही है| जबकि प्रेय मार्ग उस विकल्प को व्यक्त करता है जो तत्काल प्रिय, सुखद, एवं ऐश्वर्य से संबंधित है प्रेय का मार्ग इंद्रिय सुख, भोग, क्षणभंगुरता की तरफ ले जाता है| यद्यपि वर्तमान समय की शिक्षा प्रणाली में ज्ञानार्जन केवल रोजगार एवं व्यवसाय प्राप्त करने के लिए आवश्यक है जबकि पेट भरण के अलावा विद्यार्थियों में अनुशासन नैतिकता व अन्य मानवीय मूल्यों का पूर्णता ह्रास देखने को मिलता है शिक्षा से विद्यार्थियों में आत्म अनुशासन, ईमानदारी, धैर्य, विवेक, प्रेम, समरसता एवं उचित व अनुचित के निर्णयन की क्षमता विकसित होनी चाहिए इस दृष्टिकोण से श्रेय एवं प्रेय की उपनिषद में प्रस्तुत विचारधारा की आधुनिक जीवन एवं शिक्षा में आवश्यकता प्रकट होती है इसी संदर्भ में श्रेय एवं प्रेय की उपनिषद प्रदत्त अवधारणा आज भी विचारणीय है| श्रेय एवं प्रेय के संतुलन से ऐसी शिक्षा की कल्पना की जा सकती है जो व्यक्ति को केवल ज्ञानयोग्य, जिज्ञासु युक्त, विवेकशील, आत्म जागरूक, मानव जीवन के यथार्थता के मूल्य को समझने योग्य बनाती है। प्रस्तुत शोध पत्र इसी शैक्षिक दृष्टि को समझने और वर्तमान संदर्भ में श्रेय की उपयोगिता को स्पष्ट करने का प्रयास है।

प्रमुख शब्द (Keywords): श्रेय, प्रेय, उपनिषद्, कठोपनिषद्, शिक्षा, मूल्यपरक शिक्षा, व्यक्तित्व विकास।

प्रस्तावना

मानव जीवन निरंतर चुनाव एवं निर्णय की प्रक्रिया से जुड़ा है| दिन प्रतिदिन के क्रियोओं में मनुष्य ऐसी दुविधा पूर्ण स्थिति के मध्य फँस जाता है कि उसके लिए यह निर्णय कर पाना मुश्किल होता है कि उचित निर्णय क्या होगा? जो क्षणिक एवं त्वरित उपलब्धता है वह, या जो कल्याणकारी श्रेयस्कर है भविष्य के लिए एवं परलोक के लिए आनंद प्रदायक है| हमारे भारतीय चिंतन की परंपरा में इसी अंतर को समझने के लिए श्रेय एवं प्रेय की

[1]शोध छात्रा, लोक शिक्षा शास्त्र विभाग, महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, सतना, मध्य प्रदेश, इंडिया।

[2]प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग, महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, सतना, मध्य प्रदेश, इंडिया।

प्रासंगिकता उपयुक्त मानी जाती है| उपनिषद- भारतीय दर्शन के ऐसे महत्वपूर्ण ग्रंथों मे से हैं जो मानव के जीवन ज्ञान, आत्मबोध और कल्याण से संबंधित महत्वपूर्ण प्रश्नों पर विचार करके परम कल्याण में शुद्ध, बुद्ध, परम चेतन स्थिति वाला जीवन जीने की ओर प्रेरित करता है|

कठोपनिषद में नचिकेता एवं यमराज के संवाद के माध्यम से श्रेय तथा प्रेय दोनों मार्गों के बीच अंतर को स्पष्ट करके मार्ग को अधिक श्रेष्ठ बताया गया है- बाल्यावस्था का बालक नचिकेता के माध्यम से उपनिषद कहता है- कि यह संवाद केवल आध्यात्मिकता तक सीमित नहीं अपितु मानव के सर्वोच्च एवं सर्वांगीण विकास, मानव निर्णयन क्षमता, एवं मानव जीवन के यथार्थ उद्देश्य को समझने की क्षमता प्रदान करता है नचिकेता का चरित्र इस बात का उदाहरण देता है मानव के समक्ष क्षणिक सुख - भोग आकर्षक भौतिक पदार्थ, के प्रलोभन को त्याग कर या उस पर लिप्त न होकर मानव लक्ष्य के वास्तविक अर्थ को जानने के लिए दृढ़ रहना आवश्यक है।

वर्तमान कालीन शिक्षा प्रणाली कौशल आधारित एवं रोजगार परक है हालांकि कौशल व रोजगार को नकारा नहीं जा सकता है पर केवल मानव उद्देश्य ही उदरभरण को मनाना उचित एवं दूरगामी सिद्ध नहीं होता है क्योंकि जहां पर प्रतिस्पर्धा में ऐसी होड़ लगी है जहां सभी अधिगमकरता एक दूसरे को गिराकर आगे बढ़ने की कोशिश में हैं व केवल रोजगार (उदर भरण) के प्राप्ति के लिए अपने जीवन के प्रारंभिक अधिकतम आयु को केवल प्रतिस्पर्धा में, मानसिक तनाव के साथ व्यतीत करते हैं तो भला आगे का जीवन स्वस्थ वातावरण युक्त कैसे हो सकता है, ऐसी स्थिति पर मानव की सर्वोच्च चेतना शक्ति, परम सत्ता तक पहुंचना तो दूर मानव के मूल लक्ष्य की जानकारी से ही वंचना हो जाती है|

आज का जीवन अनेकों -अनेक प्रलोभन के विकल्पों से घिरा हुआ है- तकनीकी साधन, सामाजिक माध्यम, जनसंचार, के त्वरित सफलता को चुनाव ने मानव को संवेदनहीन एवं उग्र बना दिया है| बालकों के मानसिक स्वास्थ्य एवं एकाग्रता को भी प्रभावित किया है उपरोक्त साधनों का उचित एवं सीमित प्रयोग लाभप्रद है किंतु अंधाधुंध अनियंत्रित प्रयोग बहुत दुष्कर एवं विनाशी सिद्ध हो सकते हैं ऐसी स्थिति में श्रेय एवं प्रेय के मध्य अंतर की समझ एवं संतुलन पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक हो जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में कठोपनिषद में वर्णित श्रेय एवं प्रेय के द्विमार्गी विचारों को आधार बनाकर आधुनिक शिक्षा एवं मानव जीवन में उनकी प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया है।

कठोपनिषद् में श्रेय और प्रेय का प्रसंग:

भारतीय दार्शनिक चिंतन में कठोपनिषद् का विशेष महत्व है। इसमें नचिकेता और यमराज के संवाद के माध्यम से जीवन, मृत्यु, आत्मज्ञान तथा मनुष्य के कल्याण से संबंधित गहन प्रश्नों पर विचार किया गया है। इसी संवाद में श्रेय और प्रेय का विवेचन मिलता है, जो मनुष्य के जीवन में सही चुनाव के महत्व को समझने में सहायता करता है। नचिकेता एक जिज्ञासु बालक है, जिसके भीतर सत्य को जानने की प्रबल इच्छा है। वह केवल बाहरी

सुखों और भौतिक उपलब्धियों से संतुष्ट नहीं होता, बल्कि जीवन के वास्तविक स्वरूप को समझना चाहता है। यमराज उसे ज्ञान प्राप्त करने के मार्ग पर आगे बढ़ाते हैं और बताते हैं कि मनुष्य के सामने प्रायः दो प्रकार के विकल्प आते हैं। एक वह, जो तत्काल प्रिय लगता है; दूसरा वह, जो उसके वास्तविक कल्याण की दिशा में ले जाता है। इन दोनों के बीच अंतर समझना और उचित मार्ग का चुनाव करना मनुष्य के विवेक की परीक्षा है।

श्रेय और प्रेय का मूल मंत्र:

अन्यच्छ्रेयोऽन्यदुतैव प्रेयस्ते उभे नानार्थे पुरुषं सिनीतः।
तयोः श्रेय आददानस्य साधु भवति हीयतेऽर्थाद्य उ प्रेयो वृणीते॥

कठोपनिषद् 1.2.1

इस मंत्र का अभिप्राय में मनुष्य के चुनाव की भूमिका को महत्वपूर्ण माना गया है। प्रत्येक व्यक्ति के सामने ऐसे अवसर आते हैं, जहाँ उसे तत्काल मिलने वाले सुख और अपने दीर्घकालीन हित के बीच निर्णय लेना होता है। केवल किसी वस्तु का प्रिय लगना उसके उचित होने का प्रमाण नहीं है। किसी निर्णय का मूल्यांकन उसके परिणामों और जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव के आधार पर भी किया जाना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में यह विचार विशेष महत्व रखता है।

उदाहरण के लिए, विद्यार्थी के सामने पढ़ाई करने और अपना पूरा समय मनोरंजन में बिताने के विकल्प हो सकते हैं। मनोरंजन भी जीवन का आवश्यक हिस्सा है, लेकिन यदि उसके कारण अध्ययन और अन्य जिम्मेदारियाँ लगातार उपेक्षित हों, तो संतुलन बिगड़ सकता है। इसके विपरीत, समय का उचित विभाजन विद्यार्थी को ज्ञान प्राप्त करने और अपने व्यक्तित्व को विकसित करने में सहायता करता है। यहाँ मुख्य बात मनोरंजन का त्याग नहीं, बल्कि विवेकपूर्ण चुनाव करना है।

श्रेय और प्रेय के चुनाव में विवेक की भूमिका

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः।
श्रेयो हि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद्वृणीते॥

कठोपनिषद् 1.2.2

सरल हिंदी अर्थ: श्रेय और प्रेय दोनों मनुष्य के सामने आते हैं। विवेकशील व्यक्ति दोनों का भली-भाँति विचार करके उनमें अंतर करता है। वह प्रेय की अपेक्षा श्रेय को चुनता है, जबकि कम विवेक से निर्णय लेने वाला व्यक्ति प्रायः अपनी तात्कालिक प्राप्ति और सुरक्षा से जुड़ी इच्छाओं को प्राथमिकता देता है।

व्याख्या: इस मंत्र में विवेकशीलता को उचित निर्णय का आधार बताया गया है। विवेक का अर्थ केवल सही और गलत के बारे में जानकारी रखना नहीं है, बल्कि परिस्थितियों को समझकर उनके अनुसार उचित निर्णय लेना भी है। मनुष्य की इच्छाएँ स्वाभाविक हैं, परंतु प्रत्येक इच्छा को पूरा करना आवश्यक नहीं होता। व्यक्ति को यह विचार करना चाहिए कि उसका चुनाव उसके जीवन के उद्देश्य, कर्तव्य और कल्याण के अनुकूल है या नहीं।

शिक्षा विद्यार्थियों में इसी विवेक को विकसित करने का माध्यम बन सकती है। जब विद्यार्थी किसी निर्णय के संभावित परिणामों पर विचार करना सीखता है, तब वह दूसरों के दबाव या क्षणिक आकर्षण से प्रभावित हुए बिना निर्णय लेने में अधिक सक्षम हो सकता है। इस दृष्टि से शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि विचार करने, तर्क करने और उत्तरदायित्वपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता विकसित करना भी है।

नचिकेता द्वारा श्रेय का चयन

कठोपनिषद् में नचिकेता का चरित्र श्रेय के चुनाव को समझने का महत्वपूर्ण आधार है। यमराज उसे अनेक प्रकार के भोगों और आकर्षक उपलब्धियों का प्रस्ताव देते हैं, लेकिन नचिकेता उनसे प्रभावित होकर अपने मूल प्रश्न से विचलित नहीं होता। वह आत्मज्ञान प्राप्त करने की इच्छा को प्राथमिकता देता है। नचिकेता के इस निर्णय से यह शिक्षा मिलती है कि जीवन में प्रत्येक आकर्षक अवसर को स्वीकार करना आवश्यक नहीं है। कभी-कभी किसी बड़े उद्देश्य की प्राप्ति के लिए व्यक्ति को अपने निर्णयों में स्थिरता रखनी पड़ती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि भौतिक सुख या सांसारिक उपलब्धियाँ अनुचित हैं। महत्वपूर्ण यह है कि वे मनुष्य के विवेक, कर्तव्य और जीवन के व्यापक उद्देश्य पर हावी न हों।

आधुनिक शिक्षा में नचिकेता के इस दृष्टिकोण का उपयोग विद्यार्थियों को अपने लक्ष्यों के प्रति सजग बनाने में किया जा सकता है। विद्यार्थी को यह समझने की आवश्यकता है कि वास्तविक सफलता केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने या आर्थिक उपलब्धियाँ हासिल करने तक सीमित नहीं है। ज्ञान का सदुपयोग, नैतिक आचरण, आत्मविश्वास और समाज के प्रति उत्तरदायित्व भी व्यक्तित्व विकास के महत्वपूर्ण पक्ष हैं।

वर्तमान जीवन में इस प्रसंग की प्रासंगिकता

कठोपनिषद् में श्रेय और प्रेय का प्रसंग वर्तमान जीवन में निर्णय लेने की प्रक्रिया को समझने के लिए उपयोगी है। आज मनुष्य के सामने अनेक प्रकार के विकल्प हैं। तकनीक, संचार और मनोरंजन के साधनों ने जीवन को सुविधाजनक बनाया है, लेकिन उनके उपयोग में संतुलन बनाए रखना भी आवश्यक है। उदाहरण के लिए, सोशल मीडिया का उपयोग ज्ञान प्राप्त करने और दूसरों से संपर्क बनाए रखने के लिए किया जा सकता है। किंतु यदि व्यक्ति उसका उपयोग बिना किसी सीमा के करता है और इससे उसकी पढ़ाई, कार्य या पारिवारिक जिम्मेदारियाँ प्रभावित होती हैं, तो उसे अपने व्यवहार पर विचार करने की आवश्यकता है। इसी प्रकार, त्वरित सफलता की

चाह में अनुचित साधनों का सहारा लेने के बजाय ईमानदारी और परिश्रम के मार्ग को चुनना श्रेय की भावना से जुड़ा निर्णय हो सकता है। इस प्रकार कठोपनिषद् का श्रेय-प्रेय संबंधी प्रसंग केवल प्राचीन दार्शनिक विचार नहीं है। इसका उपयोग आधुनिक जीवन में आत्मचिंतन, विवेकपूर्ण निर्णय और संतुलित व्यक्तित्व के विकास पर विचार करने के लिए किया जा सकता है।

मानव जीवन में श्रेय और प्रेय की प्रासंगिकता

मानव जीवन केवल आवश्यकताओं की पूर्ति और सुख-सुविधाओं की प्राप्ति तक सीमित नहीं है। मनुष्य अपने जीवन में क्या प्राप्त करना चाहता है और किन मूल्यों के आधार पर जीवन जीना चाहता है, ये प्रश्न भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। दैनिक जीवन में लिए गए छोटे-बड़े निर्णय व्यक्ति के व्यवहार, विचारों और व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। ऐसे में श्रेय और प्रेय के बीच अंतर को समझना मनुष्य को अपने निर्णयों का मूल्यांकन करने में सहायता प्रदान करता है। श्रेय और प्रेय को केवल अच्छे और बुरे के बीच का अंतर मानना पर्याप्त नहीं होगा। इनके माध्यम से यह समझने का प्रयास किया जा सकता है कि किसी विकल्प का आकर्षण और उसका वास्तविक लाभ हमेशा एक समान नहीं होते। मनुष्य के जीवन में सुख, आनंद और भौतिक आवश्यकताओं का अपना स्थान है, लेकिन उनके साथ विवेक, कर्तव्य और दीर्घकालीन कल्याण का ध्यान रखना भी आवश्यक है।

आत्मसंयम और विवेकपूर्ण निर्णय

आत्मसंयम का अर्थ अपनी इच्छाओं और व्यवहार को परिस्थितियों तथा उचित उद्देश्यों के अनुसार नियंत्रित कर पाना है। जीवन में कई बार व्यक्ति जानता है कि उसके लिए कौन-सा कार्य उपयोगी होगा, फिर भी वह तत्काल आकर्षण के कारण दूसरे विकल्प को चुन लेता है। ऐसी परिस्थितियों में आत्मसंयम उसे अपने उद्देश्य के प्रति स्थिर रहने में सहायता करता है। श्रेय का चुनाव करने के लिए हमेशा सुख-सुविधाओं का त्याग करना आवश्यक नहीं होता। कई बार इसका अर्थ केवल अपनी प्राथमिकताओं को व्यवस्थित करना होता है। समय पर कार्य पूरा करना, अपनी जिम्मेदारियों को निभाना, स्वास्थ्य का ध्यान रखना और दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना ऐसे उदाहरण हैं, जिनमें आत्मसंयम की भूमिका दिखाई देती है। इस दृष्टि से श्रेय और प्रेय का विचार व्यक्ति को अपने व्यवहार के प्रति सजग बनाता है। वह अपने निर्णयों के तात्कालिक प्रभाव के साथ-साथ उनके भविष्यगत परिणामों पर भी विचार करना सीख सकता है।

नैतिक मूल्यों के संदर्भ में प्रासंगिकता

मानव जीवन में नैतिकता का महत्व इसलिए है कि व्यक्ति के निर्णय केवल उसे ही प्रभावित नहीं करते, बल्कि परिवार, समाज और अन्य लोगों पर भी उनका प्रभाव पड़ता है। ईमानदारी, करुणा, सहानुभूति, न्याय और उत्तरदायित्व ऐसे मूल्य हैं, जो व्यक्ति के आचरण को सार्थक दिशा प्रदान करते हैं। कभी-कभी व्यक्ति अपने निजी

लाभ के लिए ऐसा निर्णय लेना चाहता है, जिससे दूसरे व्यक्ति को हानि पहुँच सकती है। ऐसी स्थिति में अपने लाभ के साथ दूसरों के हित पर विचार करना आवश्यक हो जाता है। यदि कोई विद्यार्थी अधिक अंक प्राप्त करने के लिए अनुचित साधनों का सहारा लेने के बजाय परिश्रम का मार्ग चुनता है, तो उसका निर्णय नैतिक उत्तरदायित्व से जुड़ा हुआ है। यहाँ श्रेय की प्रासंगिकता इस बात में है कि व्यक्ति अपने निर्णयों को केवल निजी लाभ के आधार पर न देखे, बल्कि उनके नैतिक और सामाजिक परिणामों पर भी विचार करे। इस प्रकार श्रेय-प्रेय का अध्ययन नैतिक शिक्षा के लिए एक उपयोगी वैचारिक आधार प्रस्तुत कर सकता है।

पारिवारिक और सामाजिक जीवन में श्रेय तथा प्रेय

परिवार और समाज में रहते हुए मनुष्य को अनेक प्रकार की जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ती हैं। कभी व्यक्तिगत इच्छा और सामूहिक आवश्यकता के बीच संतुलन स्थापित करना पड़ता है। ऐसी परिस्थितियों में केवल अपनी सुविधा को प्राथमिकता देने के बजाय दूसरों की आवश्यकताओं और भावनाओं को समझना भी महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, परिवार के किसी सदस्य को सहायता की आवश्यकता होने पर व्यक्ति को अपने समय और कार्यों का पुनर्विन्यास करना पड़ सकता है। इसी प्रकार, सामाजिक जीवन में नियमों का पालन करना, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना और जरूरतमंद व्यक्तियों के प्रति संवेदनशील रहना उत्तरदायी व्यवहार के उदाहरण हैं। हालाँकि प्रत्येक परिस्थिति में व्यक्ति की अपनी आवश्यकताओं और सीमाओं का ध्यान रखना भी आवश्यक है। श्रेय का चुनाव किसी व्यक्ति से हर समय अपने हितों की उपेक्षा करने की अपेक्षा नहीं करता। इसका व्यापक आशय यह है कि व्यक्ति अपने हित और दूसरों के हित के बीच विवेकपूर्ण संतुलन स्थापित करे।

भौतिक उपलब्धियों और आंतरिक संतोष के बीच संतुलन

वर्तमान जीवन में शिक्षा, रोजगार, आर्थिक सुरक्षा और भौतिक सुविधाओं का विशेष महत्व है। ये सभी जीवन को बेहतर बनाने में सहायक हो सकते हैं। समस्या तब उत्पन्न होती है, जब व्यक्ति उपलब्धियों को ही जीवन का एकमात्र उद्देश्य मान लेता है और अपने स्वास्थ्य, संबंधों, नैतिक मूल्यों तथा आंतरिक संतोष की उपेक्षा करने लगता है। श्रेय और प्रेय का विचार इस विषय पर विचार करने का अवसर प्रदान करता है कि सफलता का मूल्यांकन किस प्रकार किया जाना चाहिए।

किसी व्यक्ति की उपलब्धियाँ महत्वपूर्ण हैं, लेकिन उसके साथ उसका आचरण, मानसिक संतुलन, सामाजिक व्यवहार और अपने कर्तव्यों के प्रति दृष्टिकोण भी महत्वपूर्ण हैं। इस संदर्भ में श्रेय का आशय भौतिक प्रगति का विरोध करना नहीं है। बल्कि यह समझना है कि भौतिक उपलब्धियाँ मानव जीवन के व्यापक विकास में सहायक बनें। व्यक्ति अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के साथ-साथ उन मूल्यों को भी बनाए रखे, जो उसके जीवन को अर्थपूर्ण बनाते हैं।

मानव व्यक्तित्व के विकास में श्रेय और प्रेय की भूमिका

व्यक्तित्व का विकास अनेक पक्षों से मिलकर होता है। इसमें विचार, भावनाएँ, व्यवहार, नैतिक दृष्टिकोण, सामाजिक संबंध और निर्णय लेने की क्षमता शामिल हैं। केवल बौद्धिक उपलब्धियाँ व्यक्ति के संपूर्ण विकास का पर्याप्त आधार नहीं बनतीं। उसके भीतर आत्मचिंतन, सहानुभूति और उत्तरदायित्व की भावना का विकास भी आवश्यक है। श्रेय और प्रेय के बीच अंतर को समझने से व्यक्ति अपने व्यवहार का मूल्यांकन कर सकता है। वह यह विचार कर सकता है कि उसके निर्णय केवल तत्काल इच्छाओं की पूर्ति कर रहे हैं या उसके जीवन को अधिक संतुलित और सार्थक बनाने में भी सहायक हैं। इस प्रकार यह विचार आत्ममूल्यांकन और व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया से जुड़ता है।

अंततः कहा जा सकता है कि मानव जीवन में श्रेय और प्रेय की प्रासंगिकता व्यक्ति को अपने चुनावों के प्रति सजग बनाने में निहित है। जब मनुष्य अपनी इच्छाओं, विवेक, कर्तव्य और व्यापक कल्याण के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है, तब उसके व्यक्तित्व का विकास अधिक उत्तरदायी और सार्थक दिशा में हो सकता है।

आधुनिक शिक्षा में श्रेय और प्रेय की प्रासंगिकता

शिक्षा मानव जीवन को दिशा देने वाली एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इसके माध्यम से व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करता है, अपने कौशल विकसित करता है तथा समाज में अपनी भूमिका को समझता है। वर्तमान समय में शिक्षा का संबंध केवल पुस्तकीय ज्ञान से नहीं, बल्कि व्यक्ति की बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक क्षमताओं के विकास से भी है। इस दृष्टि से श्रेय और प्रेय का विचार आधुनिक शिक्षा के उद्देश्यों पर विचार करने के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करता है। कठोपनिषद् में श्रेय और प्रेय के बीच अंतर को मनुष्य के चुनाव से जोड़कर समझाया गया है।

आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में इस विचार का आशय यह है कि विद्यार्थी केवल तत्काल लाभ या बाहरी उपलब्धियों को ही सफलता का आधार न मानें, बल्कि ज्ञान, चरित्र, विवेक और उत्तरदायित्व को भी महत्व दें। शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को विकल्पों की जानकारी देना ही नहीं, बल्कि उनमें उचित विकल्प चुनने की क्षमता विकसित करना भी होना चाहिए।

शिक्षा का उद्देश्य और श्रेय का विचार

शिक्षा के व्यापक उद्देश्य में व्यक्ति का सर्वांगीण विकास शामिल है। ज्ञान और कौशल के साथ-साथ विद्यार्थी में आत्मविश्वास, नैतिकता, सहानुभूति तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास भी आवश्यक है। यदि शिक्षा केवल

परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने और रोजगार हासिल करने तक सीमित हो जाए, तो व्यक्ति के विकास के कुछ महत्वपूर्ण पक्षों की उपेक्षा हो सकती है। श्रेय का विचार शिक्षा को एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

यह विद्यार्थी को अपने ज्ञान का उचित उपयोग करने, अपने निर्णयों के परिणाम समझने और अपने कार्यों के प्रति उत्तरदायी बनने की प्रेरणा देता है। उदाहरण के लिए, किसी विद्यार्थी के लिए केवल अच्छे अंक प्राप्त करना ही पर्याप्त नहीं है; यह भी महत्वपूर्ण है कि वह ईमानदारी से अध्ययन करे, दूसरों के प्रति सम्मान रखे और प्राप्त ज्ञान का सकारात्मक उपयोग करे। इस प्रकार श्रेय की दृष्टि शिक्षा को केवल उपलब्धि-केंद्रित प्रक्रिया के बजाय व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया के रूप में देखने में सहायता करती है।

विद्यार्थी जीवन में श्रेय और प्रेय

विद्यार्थी जीवन में अनेक ऐसे अवसर आते हैं, जहाँ इच्छाओं और जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाना आवश्यक होता है। मनोरंजन, खेल, मित्रता और तकनीकी साधन विद्यार्थी जीवन के स्वाभाविक हिस्से हैं। इनके उचित उपयोग से जीवन में आनंद और सीखने के नए अवसर मिलते हैं। लेकिन जब इनका उपयोग पढ़ाई, स्वास्थ्य या आवश्यक जिम्मेदारियों में बाधा उत्पन्न करने लगे, तब अपने व्यवहार पर विचार करना आवश्यक हो जाता है।

उदाहरण के लिए, कोई विद्यार्थी परीक्षा की तैयारी के समय अपने अध्ययन और मनोरंजन के बीच संतुलन स्थापित करता है। वह नियमित अध्ययन के लिए समय निर्धारित करता है और साथ ही विश्राम तथा मनोरंजन के लिए भी समय निकालता है। ऐसा व्यवहार विवेकपूर्ण निर्णय और आत्मअनुशासन को दर्शाता है। इस उदाहरण से स्पष्ट होता है कि श्रेय और प्रेय का विचार विद्यार्थियों को सभी सुखद गतिविधियों से दूर रहने की शिक्षा नहीं देता। इसके बजाय यह उन्हें अपने लक्ष्यों और परिस्थितियों के अनुरूप उचित प्राथमिकताएँ निर्धारित करने की प्रेरणा देता है।

शिक्षक की भूमिका

शिक्षा प्रक्रिया में शिक्षक का स्थान महत्वपूर्ण है। शिक्षक केवल विषय संबंधी ज्ञान प्रदान करने वाला व्यक्ति नहीं है, बल्कि वह अपने व्यवहार, विचारों और कार्यशैली से विद्यार्थियों को प्रभावित भी करता है। उसके आचरण में ईमानदारी, निष्पक्षता, अनुशासन और संवेदनशीलता दिखाई देती है, तो विद्यार्थी इन मूल्यों को अपने जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित हो सकते हैं। श्रेय और प्रेय के संदर्भ में शिक्षक विद्यार्थियों को किसी निर्णय के विभिन्न पक्षों पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है।

उदाहरण के लिए, कक्षा में ऐसी परिस्थितियों पर चर्चा की जा सकती है, जिनमें व्यक्तिगत लाभ और सामूहिक हित के बीच चुनाव करना पड़ता है। इससे विद्यार्थियों में तर्क करने, दूसरों के दृष्टिकोण को समझने और अपने

निर्णयों के परिणामों पर विचार करने की क्षमता विकसित हो सकती है। शिक्षक का कार्य विद्यार्थियों पर अपने विचार थोपना नहीं, बल्कि उन्हें स्वतंत्र और विवेकपूर्ण चिंतन के लिए सक्षम बनाना है। इस प्रकार शिक्षक श्रेय-प्रधान जीवन-दृष्टि के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

मूल्यपरक शिक्षा और श्रेय-प्रेय का संबंध

मूल्यपरक शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों में ऐसे गुणों का विकास करना है, जो उन्हें व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में उत्तरदायी बनाएँ। सत्यनिष्ठा, करुणा, सहयोग, न्याय, सहिष्णुता और कर्तव्यनिष्ठा इसके महत्वपूर्ण पक्ष हैं। श्रेय और प्रेय का विचार मूल्यपरक शिक्षा से इसलिए संबंधित है, क्योंकि यह व्यक्ति को अपने निर्णयों के नैतिक पक्ष पर विचार करने का अवसर देता है।

उदाहरण के लिए, किसी विद्यार्थी के सामने परीक्षा में अनुचित साधन अपनाकर अंक प्राप्त करने का अवसर हो सकता है। तत्काल लाभ की दृष्टि से यह विकल्प आकर्षक लग सकता है, लेकिन ईमानदारी से परीक्षा देना विद्यार्थी के चरित्र और आत्मसम्मान के लिए अधिक उपयुक्त है। ऐसी परिस्थितियों पर चर्चा करने से विद्यार्थियों को यह समझने में सहायता मिल सकती है कि शिक्षा का वास्तविक महत्व केवल प्रमाणपत्र प्राप्त करना नहीं, बल्कि ज्ञान और नैतिक मूल्यों का विकास करना भी है।

आधुनिक तकनीक और डिजिटल जीवन के संदर्भ में प्रासंगिकता

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में डिजिटल तकनीक का उपयोग निरंतर बढ़ रहा है। इंटरनेट, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, डिजिटल पुस्तकालय और शैक्षिक अनुप्रयोग विद्यार्थियों को ज्ञान प्राप्त करने के अनेक अवसर प्रदान करते हैं। दूसरी ओर, तकनीकी साधनों का अनियोजित उपयोग समय प्रबंधन और एकाग्रता को प्रभावित कर सकता है। श्रेय और प्रेय का विचार इस संदर्भ में तकनीक के विवेकपूर्ण उपयोग पर बल देने के लिए उपयोगी है। विद्यार्थी यदि मोबाइल और इंटरनेट का उपयोग अध्ययन, शोध तथा रचनात्मक गतिविधियों के लिए करता है, तो तकनीक उसके विकास में सहायक बन सकती है।

इसके विपरीत, यदि वह इनके उपयोग में संतुलन नहीं रख पाता और आवश्यक कार्यों की उपेक्षा करने लगता है, तो उसे अपनी प्राथमिकताओं का पुनर्मूल्यांकन करना चाहिए। इस प्रकार आधुनिक शिक्षा में तकनीकी दक्षता के साथ डिजिटल अनुशासन और जिम्मेदार उपयोग की समझ विकसित करना भी आवश्यक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में श्रेय और प्रेय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा को अधिक समग्र, लचीला, बहुविषयक और मूल्यपरक बनाने पर बल दिया गया है। नीति में विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ नैतिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास को भी

महत्व दिया गया है। इस दृष्टि से शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में विचारशीलता, रचनात्मकता, संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व का विकास करना भी है। श्रेय और प्रेय की उपनिषद् में प्रस्तुत विचारधारा तथा आधुनिक शिक्षा के इन उद्देश्यों के बीच एक वैचारिक संबंध स्थापित किया जा सकता है। श्रेय का विचार विवेकपूर्ण चुनाव, आत्मसंयम और व्यापक कल्याण की ओर ध्यान आकर्षित करता है।

ये गुण विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए उपयोगी हैं। हालाँकि, श्रेय और प्रेय की उपनिषद् में वर्णित अवधारणा तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों को समान मानना उचित नहीं होगा। दोनों की ऐतिहासिक और वैचारिक पृष्ठभूमि अलग है। इनके बीच संबंध का अध्ययन एक तुलनात्मक एवं व्याख्यात्मक दृष्टिकोण से किया जाना चाहिए।

वर्तमान शैक्षिक संदर्भ में चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ:

वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप निरंतर परिवर्तनशील है। तकनीकी विकास, वैश्वीकरण, प्रतिस्पर्धा और बदलती सामाजिक आवश्यकताओं ने शिक्षा के उद्देश्यों तथा उसकी कार्यप्रणाली को प्रभावित किया है। आज विद्यार्थी के सामने ज्ञान प्राप्त करने के अनेक साधन उपलब्ध हैं, लेकिन इन साधनों का उचित चयन और उपयोग एक महत्वपूर्ण चुनौती भी है। ऐसे परिवेश में श्रेय और प्रेय की अवधारणा शिक्षा को विवेकपूर्ण दिशा प्रदान करने में उपयोगी हो सकती है।

तात्कालिक सफलता की प्रवृत्ति

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में परीक्षा, अंक, प्रतियोगिता और करियर को विशेष महत्व प्राप्त है। इनका अपना महत्व है, लेकिन जब विद्यार्थी शिक्षा को केवल अंक या रोजगार प्राप्त करने का साधन मानने लगता है, तब शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों की उपेक्षा होने की संभावना रहती है। प्रेय की प्रवृत्ति व्यक्ति को तत्काल उपलब्धि और त्वरित संतोष की ओर आकर्षित कर सकती है, जबकि श्रेय व्यक्ति को दीर्घकालीन विकास और वास्तविक हित की ओर उन्मुख करता है। इसलिए शिक्षा में विद्यार्थियों को केवल सफलता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करने के स्थान पर सफलता के उचित साधनों और उसके व्यापक उद्देश्य पर भी विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

तकनीकी साधनों का बढ़ता प्रभाव

डिजिटल तकनीक ने शिक्षा को अधिक सुलभ और व्यापक बनाया है। विद्यार्थी ऑनलाइन सामग्री, डिजिटल पुस्तकालय और विभिन्न शैक्षिक माध्यमों से ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इसके साथ ही मनोरंजन और सामाजिक संपर्क के अनेक साधन भी उनके सामने उपलब्ध हैं। यहाँ चुनौती तकनीक से दूर रहने की नहीं, बल्कि उसके

विवेकपूर्ण उपयोग की है। यदि विद्यार्थी तकनीक का उपयोग ज्ञान, शोध और रचनात्मक कार्यों के लिए करता है, तो यह उसके विकास में सहायक हो सकती है। इसके विपरीत, यदि तकनीकी साधनों का अत्यधिक या अनियोजित उपयोग अध्ययन और एकाग्रता को प्रभावित करता है, तो विद्यार्थी को अपनी प्राथमिकताओं पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता होती है। इस संदर्भ में शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य विद्यार्थियों में डिजिटल विवेक और आत्मसंयम विकसित करना हो सकता है।

उपभोक्तावादी प्रवृत्ति और शिक्षा

वर्तमान सामाजिक वातावरण में भौतिक उपलब्धियों और बाहरी सफलता को महत्व दिए जाने की प्रवृत्ति दिखाई देती है। इसका प्रभाव विद्यार्थियों की आकांक्षाओं और सफलता की उनकी समझ पर भी पड़ सकता है। महँगी वस्तुएँ, प्रतिष्ठा और आर्थिक उपलब्धियाँ जीवन के महत्वपूर्ण पक्ष हो सकते हैं, लेकिन इन्हें ही जीवन की सफलता का एकमात्र आधार मानना उचित नहीं है। श्रेय की दृष्टि विद्यार्थी को यह समझने में सहायता कर सकती है कि वास्तविक विकास में ज्ञान, चरित्र, सामाजिक उत्तरदायित्व और आत्मसंतोष का भी महत्व है। इस प्रकार शिक्षा भौतिक प्रगति के साथ मानवीय मूल्यों को संतुलित करने में सहायक बन सकती है।

नैतिक मूल्यों के विकास की चुनौती

आधुनिक शिक्षा में विषयगत ज्ञान और व्यावसायिक दक्षताओं के साथ नैतिक मूल्यों का विकास भी आवश्यक है। विद्यार्थी को यह समझना चाहिए कि उसके ज्ञान और कौशल का उपयोग किस प्रकार किया जाना चाहिए। शिक्षा में श्रेय और प्रेय का विचार नैतिक निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने में सहायक हो सकता है। विद्यार्थियों के सामने वास्तविक जीवन से संबंधित परिस्थितियाँ रखकर उनसे संभावित विकल्पों और उनके परिणामों पर चर्चा की जा सकती है। इससे वे केवल निर्देशों का पालन करने के बजाय स्वयं विचार करके निर्णय लेना सीख सकते हैं।

शिक्षक के सामने चुनौती

वर्तमान शिक्षा में शिक्षक की भूमिका भी बदल रही है। शिक्षक अब केवल ज्ञान प्रदान करने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि सीखने की प्रक्रिया में मार्गदर्शक और सहयोगी की भूमिका निभाता है। ऐसी स्थिति में शिक्षक के सामने यह चुनौती रहती है कि वह विद्यार्थियों में स्वतंत्र चिंतन के साथ जिम्मेदार निर्णय क्षमता भी विकसित करे। शिक्षक स्वयं अपने व्यवहार में संतुलन, अनुशासन, निष्पक्षता और संवेदनशीलता का उदाहरण प्रस्तुत कर सकता है। साथ ही कक्षा में ऐसी गतिविधियाँ आयोजित की जा सकती हैं, जिनमें विद्यार्थी विभिन्न परिस्थितियों में उचित निर्णय लेने का अभ्यास करें ।

शिक्षा में श्रेय की ओर उन्मुखीकरण की संभावनाएँ

वर्तमान परिस्थितियों में श्रेय और प्रेय की अवधारणा को शिक्षा से जोड़ने की अनेक संभावनाएँ हैं। इसे केवल सैद्धांतिक चर्चा तक सीमित न रखकर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का हिस्सा बनाया जा सकता है ।

इसके लिए निम्नलिखित उपाय उपयोगी हो सकते हैं–

1. मूल्यपरक शिक्षा को पाठ्यक्रम और गतिविधियों से जोड़ना।
2. विद्यार्थियों में आत्मचिंतन की आदत विकसित करना।
3. निर्णय लेने और समस्या-समाधान से संबंधित गतिविधियाँ कराना।
4. तकनीकी साधनों के संतुलित उपयोग के प्रति जागरूक करना।
5. तत्काल सफलता के साथ दीर्घकालीन लक्ष्य निर्धारित करने के लिए प्रेरित करना।
6. विद्यार्थियों में सामाजिक एवं नैतिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना।
7. शिक्षक-विद्यार्थी संवाद के माध्यम से जीवन-मूल्यों पर चर्चा करना।
8. भारतीय ज्ञान परंपरा के विचारों को आधुनिक शैक्षिक संदर्भ से जोड़ना।

सर्वांगीण शिक्षा की संभावना

शिक्षा का अंतिम उद्देश्य केवल ज्ञान या कौशल का विकास नहीं, बल्कि ऐसे व्यक्ति का निर्माण करना है जो अपने जीवन में प्राप्त ज्ञान का विवेकपूर्ण उपयोग कर सके। श्रेय और प्रेय का विचार इस व्यापक उद्देश्य को समझने में सहायता कर सकता है। यदि शिक्षा विद्यार्थी को यह समझने में सक्षम बनाती है कि प्रत्येक आकर्षक विकल्प आवश्यक रूप से उसके दीर्घकालीन हित में नहीं होता, तो उसमें निर्णय लेने की परिपक्वता विकसित हो सकती है। इसी प्रकार यदि वह यह समझता है कि हर कठिन विकल्प त्याग या वंचना का प्रतीक नहीं है, बल्कि कभी-कभी वही विकल्प उसके विकास का आधार बन सकता है, तो उसमें धैर्य और आत्मसंयम विकसित हो सकता है। इस प्रकार वर्तमान शैक्षिक संदर्भ में श्रेय और प्रेय की प्रासंगिकता का मुख्य आधार विवेकपूर्ण चुनाव, आत्मसंयम, नैतिक उत्तरदायित्व और दीर्घकालीन विकास है। आधुनिक शिक्षा यदि इन गुणों को विकसित करने में सफल होती है, तो वह विद्यार्थी को केवल परीक्षा और रोजगार के लिए नहीं, बल्कि जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में उचित निर्णय लेने के लिए भी तैयार कर सकती है ।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि श्रेय और प्रेय की अवधारणा भारतीय चिंतन परंपरा में मानव के जीवन में आने वाले मार्ग में उचित मार्ग के चयन से संबंधित विचार प्रस्तुत करता है। श्रेय व्यक्ति के वास्तविक हित आत्मविश्वास और दीर्घ कालिक कल्याण ही नहीं अपितु वह परम चेतन तत्व प्रदायक है जो

मानव के अंदर निहित है परंतु इस मृगमरीचिका रूपी मार्ग (प्रेयस) को चुनने के बाद वह दिखाई नहीं देता है केवल तृष्णा के कारण उसकी प्राप्ति एवं प्राप्ति के बाद उसे संजोने में पूरी जीवन को लगा दिया जाता है।

शिक्षा के क्षेत्र में श्रेय और प्रेय का संदर्भ इसलिए प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि आज -कल की समसामयिकी शिक्षा को ज्ञान एवं कौशल प्रदान करने की प्रक्रिया मान लिया गया है जो की पूर्णरूपेण शिक्षा के यथार्थ स्वरूप को ही विकृत कर दिया है इसी विकृतियुक्त शिक्षा के कारण मानव एक ऐसी स्थिति पर खड़ा है कि वह केवल देहधारी होने के कारण मानव है अन्यथा की स्थिति पर ना अनुशासन शिष्टाचार प्रेम सौहार्द व मानवीय गुण जैसी चीज ही विलुप्त हो कौशल व तकनीक दक्षता होते हुए भी युवा विपरीत परिस्थितियों में आत्महत्या (suicide) और असामाजिक क्रियाएं (anti-social activities) करने में बुद्धि व विवेक का प्रयोग करने में असमर्थ हो रहा है।

त्वरित सफलता के इच्छा ने युवाओं को इतना अंधा बना दिया है की एकाग्रता एवं धैर्य जैसे गुणों का कोई स्थान नहीं बचा है। ऐसी स्थिति को देखते हुए यह स्पष्ट हो गया कि मानवों की ऐसी स्थिति को कुसामायोजित मनोदशा (maladjusted state of mind) के पीछे केवल एक कारक नहीं अपितु घर विद्यालय शिक्षक एवं पाठ्यक्रम (curriculum) जैसे महत्वपूर्ण कारक जो शैशवावस्था (infancy stage) से क्रियान्वित होकर किशोरावस्था (adolescence) एवं युवावस्था adulthood) तक में उग्रता पूर्वक प्रभावित करते हैं।

वर्तमान में कौशल आधारित शिक्षा के साथ-साथ श्रेय शिक्षा भी बालकों में लाने का प्रयास करना चाहिए जिससे बालक पूर्ण मानव बनाकर अपना एवं समाज या जनकल्याण करने में समर्थ हो अतः शिक्षा के क्षेत्र में श्रेय एवं पत्र की अवधारणा को एक नैतिक निर्देश के रूप में नहीं बल्कि विवेकपूर्ण निर्णय एवं संतुलित जीवन दृष्टि विकसित करने वाले शैक्षिक आधार के रूप में देखा जाना चाहिए।

संदर्भ-सूची

कठोपनिषद्। *ईशादि नौ उपनिषद्*। गोरखपुर: गीता प्रेस।

राधाकृष्णन, सर्वपल्ली। (2008)। *The Principal Upanishads*। नई दिल्ली: HarperCollins Publishers India।

शर्मा, चन्द्रधर। (2008)। *A Critical Survey of Indian Philosophy*। नई दिल्ली: Motilal Banarsidass।

हिरियन्ना, एम. (2000)। *Outlines of Indian Philosophy*। नई दिल्ली: Motilal Banarsidass।

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। (2020)। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (National Education Policy 2020)*। नई दिल्ली: भारत सरकार।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (NCERT)। (2005)। *National Curriculum Framework 2005*। नई दिल्ली: NCERT।